



प्रेस विज्ञप्ति

आरडीएसओ द्वारा फ्लैट वैगन प्रकार 'RO-RO' के दोलन परीक्षण शुरू

RO-RO (रोल ऑन-रोल ऑफ) वैगन को आरडीएसओ द्वारा भारतीय रेलवे ट्रैक पर 100 किमी प्रति घंटे की गति के लिए ट्रक/अन्य कमांडिटी (ट्रक के अंदर लोड) के लिए डिजाइन और विकसित किया गया है।

RO-RO वैगन संशोधित फ्लैट बीआरएन वैगन हैं। RO-RO वैगनों में खाली और माल ढुलाई दोनों ट्रकों को बीआरएन वैगन पर एक लूप के डेड-एंड पर प्रदान किए गए रैंप के माध्यम से लोड किया जाता है, इस बीआरएन वैगन पर ट्रकों के गुजरने के लिए उपयुक्त रूप से विकसित किया गया है। बीआरएन पर लोड करने से पहले, ट्रकों को एक ऊंचाई गेज (अधिकतम ऊंचाई - सड़क स्तर से 3.4 मीटर ऊपर) के नीचे तौला और पारित किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे सुरक्षित मार्ग के लिए अधिकतम चलने वाले आयामों के अनुरूप हैं। सड़क मार्ग से आवाजाही की तुलना में RO-RO ट्रेन की गति काफी तेज होती है, RO-RO में लोडिंग / अनलोडिंग का टर्मिनल समय सिर्फ 15 से 20 मिनट है तथा दुर्घटनाओं का कोई जोखिम नहीं है, ट्रकों को सफ़र के दौरान कोई नुकसान नहीं होता, ट्रक सड़कों पर नहीं चल रहे हैं इसीलिए प्रदूषण कम होता है और टोल टैक्स आदि का कोई झंझट नहीं है।

RORO वैगन के ट्रेन फॉर्मेशन में पाँच सेट होते हैं (एक पूरी ट्रेन बनाने वाले रेलवे वाहनों का एक सेट)। प्रत्येक कंसिस्ट में दो ए-कारें दोनों छोर पर और सात बी-कारें दो ए कारों के बीच मध्यवर्ती स्थिति में होती हैं। ए-कार और बी-कार की वहन क्षमता क्रमशः 62 टन और 64 टन होती है।

RORO वैगन की गति क्षमता का निर्धारण करने के लिए परीक्षण निदेशालय, आरडीएसओ द्वारा दोलन परीक्षण किए जाने हैं। इन विस्तृत दोलन परीक्षणों में तीन अलग-अलग स्थितियां शामिल हैं - यानी RORO वैगन खाली स्थिति में, RORO वैगन खाली ट्रक के साथ तथा RORO वैगन भरी हुई ट्रक के साथ अलग-अलग गति पर परीक्षण किये गए। वैगन पर लदी वस्तु की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ये परीक्षण अपरिहार्य हैं (बिना नुकसान के गंतव्य तक पहुंचने के लिए) और वैगनों की स्वीकृति के लिए लागू परीक्षण डेटा को 'स्थायी मानदंड समिति की तीसरी रिपोर्ट' में निर्धारित मानदंडों और सीमाओं के अनुसार संकलित और मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

ये दोलन परीक्षण 19 अप्रैल 2022 को उत्तर मध्य रेलवे के महोबा-खजुराहो खंड पर शुरू किए गए थे और 6 मई 2022 तक पूरा होने की उम्मीद है। आरडीएसओ परीक्षण टीम में श्री शिशिर कांत मिश्रा/निदेशक, श्री शैलेश सिंह/सहायक अनुसंधान अभियंता और परीक्षण निदेशालय के कर्मचारी श्री रुपेश कोहली/कार्यकारी निदेशक के सक्षम मार्गदर्शन में परीक्षण किया गया। इन परीक्षणों के परिणामों के आधार पर भारतीय रेलवे ट्रैक पर RORO वैगन के संचालन के लिए आरडीएसओ द्वारा अंतरिम गति प्रमाणपत्र जारी किया जाएगा। उम्मीद है कि भारतीय रेलवे को जल्द ही परिवहन के लिए ये नए रोलिंग स्टॉक मिल जाएंगे।

सं. पीआर/पब्लिसिटी/22

दिनांक 28.04.2022

कृपया उपर्युक्त समाचार को फोटोग्राफ सहित अपने प्रतिष्ठित समाचार पत्र में प्रकाशित करने की व्यवस्था करें।

आशीष
28.04.2022
(डॉ. आशीष अग्रवाल)
कार्यकारी निदेशक/प्रशासन-1

सेवा में,
सम्पादक



भारत सरकार - रेल मंत्रालय
अनुसंधान अधिकार्य और मानक संगठन
लखनऊ - 226 011
EPBX (0522) 2451200
Fax (0522) 2458500

Government of India-Ministry of Railways
Research Designs & Standards Organisation
Lucknow - 226 011
DID (0522) 2450115
DID (0522) 2465310



Press Release

RDSO Starts Oscillation Trials of Flat Wagon Type 'RORO'

RORO (Roll on - Roll off) Wagon has been designed and developed by RDSO for end to end transportation of Truck/other commodity (loaded inside the truck) for a speed of 100 kmph on Indian Railway track.

RO-RO wagons are modified flat BRN wagons. In RO-RO wagons both empty and freight trucks are loaded through a ramp provided at the dead-end of a loop on BRN wagons which have been suitably modified for through passage of trucks over them. Before loading over the BRNs, the trucks are weighed and passed under a height gauge (maximum height – 3.4 metres above road level) to ensure that they conform to the maximum moving dimensions for safe passage. The main benefits of RO-RO wagons are Speed of Ro-Ro train is fast enough as compared to movement by Road, Terminal time of loading/unloading is just 15 to 20 minutes in Ro-Ro, No enroute risk of accidents, No wear and tear of trucks, Less pollution as trucks are not plying on the roads, No hassle of octroi, toll tax etc.

The train formation of RORO wagon has five consists (a set of railway vehicles forming a complete train). Each consist is having two A-Cars placed at both end and seven B-Cars in intermediate position between the two A cars. Carrying capacity of A-Car and B-Car is 62 t & 64 t respectively.


To determine the speed potential of RORO wagon, oscillation trials have to be conducted by Testing Directorate, RDSO. These Detailed Oscillation trials comprises of three different condition – i.e. in empty condition, loaded condition with empty truck and loaded condition with loaded truck on different speeds. These trials are inevitable to ensure the safety of commodity loaded on wagon (to reached destination without damage) and the test data must be compiled & assessed in term of criteria and limits as laid down in the 'Third report of the standing criteria committee' as applicable for acceptance of wagons.

These oscillation trials were started on 19 April 2022 over Mahoba- Khajuraho section of North Central Railway and expected to be completed by 6th May 2022. The RDSO Testing team comprising of Sh. Shishir Kant Mishra/Director, Sh. Shailesh Singh/Assistant Research Engineer & Staff of Testing Directorate under the able guidance of Sh. Rupesh Kohli/Exe. Director conducted the trial. Depending upon the results of these trials, the Interim Speed Certificate will be issued by RDSO for the operation of RORO wagon on Indian Railway track. It is expected that the Indian Railway will get these new rolling stocks for transportation shortly.

No. PR/Publicity/22

Dt. 28.04.2022

Kindly arrange to publish the above news item along with photograph in your esteemed daily newspaper.


(Dr. Ashish Agrawal)
ED/Admin-I

The Editor,